आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022
Received:28/07/2022; Accepted:16/08/2022; Published:24/09/2022

राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता का दायित्व

- डॉ. सुभाषिनी लता कुमार
हिन्दी प्रवक्ता
फिजी नेशनल यूनिवर्सिटी , फिजी

डॉ. सुभाषिनी लता कुमार, राष्ट्रीय आंदोलन और हिन्दी पत्रकारिता का दायित्व, आखर हिंदी पत्रिका, खंड 2/अंक 3/सितंबर 2022,(189-192)

आजादी के अमृत महोत्सव के निमित्त स्वाराज और स्वाधीनता के पहलुओं को जब याद करते हैं तब भारत के राष्ट्रीय आंदोलन में हिंदी पत्रपत्रिकाओं की अहम भूमिका- को भुलाया नहीं जा सकता है। पत्रकारिता के महत्व और दायित्व को हम महात्मा गांधी के जरिये ठीक से समझ सकते हैं। उन्होंने कहा था "पत्रकारिता का काम पाठक के दिमाग में चाही-अनचाही चीजें थोपना नहीं है बल्कि आम जन के दिमाग को जाग्रत करना है।" हिंदी पत्रकारिता ने सामाजिक बदलावों के साथ भारत के राष्ट्र निर्माण में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इतिहास के पन्नों पर नजर डाले तो अंग्रेजों के शासन काल और जुल्मों कई जुड़ी से सितम, साथ-साथ के दंश के गुलामी है। उभरती में स्मृतियों घटना एवं राष्ट्रीय चेतना की गूँज हिन्दी पत्रकारिता में स्पष्ट रूप से सुनाई दी।

भारत में हिंदी पत्रकारिता की नींव अठाहरवीं सदी में बंगाल से हुई और इसका श्रेय राजा राममोहन राय को दिया जाता है। राजा राममोहन राय ने ही सबसे पहले प्रेस को सामाजिक उद्देश्य से जोड़ा। भारतीयों के सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक, आर्थिक हितों का समर्थन किया। समाज में व्याप्त अंधविश्वास और कुरीतियों पर प्रहार किए और अपने पत्रों के जरिए जनता में जागरूकता पैदा की। 30 मई 1826 को कलकत्ता से पंडित जुगल किशोर शुक्ल के संपादन में निकलने वाले को हिंदी का पहला समाचार पत्र माना जाता 'उदंत मार्तण्ड' है।अपने संपादकीय में उन्होंने लिखा कि उदंत मार्तंड हिंदुस्तानियों के हितों लिए है। इस मूल्य को लेकर भारत की पत्रकारिता का उदय हुआ।

जिस दौर में उदंत मार्तंड शुरू हुआ था वह दौर पराधीनता का दौर था। भारत की पत्रकारिता का पहला लक्ष्य था राष्ट्रीय जागरण और भारत की स्वाधीनता के यज्ञ को तीव्र करना। ऐसे महान उद्देश्य को लेकर भारत की पत्रकारिता की शुरुआत हुई। यह भारत की पत्रकारिता का सर्वप्रथम मूल्य बोध है कि मीडिया या पत्रकारिता किसी भी कारण से राष्ट्र और समाज के हित से विरक्त नहीं हो सकती। हिंदी पत्रकारिता की शुरुआत

होती है एक सीमित संसाधन और कमजोर आर्थिक स्थिति वाले व्यक्ति जिनके पास मीडिया हाउसेस नहीं थे लेकिन बावजूद इसके उनका संकल्प बहुत बड़ा था। मीडिया ने अपनी भूमिका से यह साबित किया है कि वह लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है। पत्रकारिता का मूल्य धर्म लोक कल्याण, राष्ट्रीय जागरण और ऐसे हर दुर्बल व्यक्ति के साथ खड़े होना है, उसके अधिकारों, हितों के लिए लड़ना, जिसका कोई सहारा नहीं है।

भारत अपनी आजादी के 75वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है और हम आज अपनी आजादी का अमृत ' मना रहे हैं। यह आजादी किसी एक रास्ते पर चलकर प्राप्त नहीं हुई है। लो 'महोत्सवगों ने विभिन्न माध्यमों से आजादी के लिए संघर्ष किया। भारत का बौद्धिक वर्ग जिसमें लेखक, पत्रकार, विचारक, समाज सुधारक इत्यादि क्षेत्रों से जुड़े लोग भी आजादी के संघर्ष में हिस्सा ले रहे थे। वे क्रांतिकारी जनता में साहस का संचार करते थे और उनके विचारों को जनजन तक पहुँचाने का कार्य पत्रकार और सम्पादक अपने पत्रों के माध्यम से कर रहे - थे। ये पत्र अपने क्रांतिकारी वििचारों के माध्यम से भारत के नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागृत कराते हैं तथा उपनिवेशवादी मानसिकता से भी मुक्ति देने का प्रयास करते हैं। उस वक्त भारत का प्रत्येक बुद्धिजीवी अपने विचारों को जनता के सामने लाने के लिए पत्रकारिता का सहारा लेता है।

राजाराम मोहन राय, बाल गंगाधर तिलक, महात्मा गांधी, शिवप्रसाद गुप्त, भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, बालकृष्ण भट्ट, मदनमोहन मालवीय, गणेश शंकर विद्यार्थी इत्यादि स्वतंत्रता संघर्ष के नायक थे और अपने पत्रों तथा साहित्य के माध्यम से भारत में नवचेतना का प्रसार कर रहे थे। इन विचारकों ने अपने पत्रों के माध्यम से न केवल जनता को गुलामी के काले धब्बों का एहसास कराया, बल्कि उनके निजी जीवन को भी सुधारने का प्रयत्न किया। इन्हीं प्रयत्नों के फलस्वरूप भारत में नवजागरणकालीन चेतना जनता के अंदर जागी और जनता अपनी अशिक्षा, रुढ़िवादिता, धार्मिक पाखण्ड तथा वैज्ञानिक चेतना के अभाव को पहचान पाती है। इन बुद्धिजीवियों ने आजादी के लिए पहले जनता को तैयार करने का काम किया और इस काम में सर्वाधिक सहयोग पत्रकारिता के माध्यम से हुआ।

बीसवीं शताब्दी में पत्रकारिता ने अंग्रेज सरकार के प्रतिपक्ष में क्रांतिकारी भूमिका निभाई थी। बीसवीं शताब्दी का समय वह समय था जब देश के नौजवान, स्त्री, बूढ़े और बच्चे तक स्वातंत्र्य समर में हिस्सा लेने लगते हैं। अंग्रेज सरकार के खिलाफ बिगुल फूंकने वाले पत्रों में सन् 1897 में प्रकाशित तिलक के पत्र 'केसरी' ने अग्रणीय भूमिका निभाई। यह पत्र मराठी भाषा में प्रकाशित होता था, किंतु इस पत्र के माध्यम से राष्ट्रीयता की आवाज उठाने के कारण तिलक को राष्ट्रीय छवि का पत्रकार माना गया। तिलक एक निर्भिक पत्रकार थे और 'केसरी' के माध्यम से उन्होंने अंग्रेज सरकार के दमनपूर्ण नीति के खिलाफ खुलकर लिखा। उन्होंने अंग्रेजी शासन की कमियों को उजागर किया और लोगों में अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता उत्पन्न की।

प्रखर पत्रकार महामना मदन मोहन मालवीय (25 दिसम्बर 1861 - 12 नवंबर 1946) ने देश की स्वाधीनता को लेकर विभिन्न लेख पत्रिकाओं में लिखे। मालवीय जी एक निर्भीक पत्रकार थे। देश के प्रमुख समस्याओं को लेकर उन्होंने सवाल उठाया और खुद उनके निराकरण का प्रयास वह व्यक्तिगत तौर पर भी करते हैं। उनके लेखन में धर्म, भक्ति, अध्यात्म और हिन्दू समाज का कल्याण दिखाई देता है तो हिंदूमुस्लिम एका को - उर्दू भाषा के लिपि -मुस्लिम का आपसी बैर हो या हिंदी-भी वह देश की अखंडता के लिए जरूरी मानते हैं। हिन्दू का विवाद हो इत्यादि समस्याओं की जड़ के रूप में वह ब्रिटिश साम्रज्य के विभाजनकारी नीति की आलोचना करते हैं। उनकी चिंतन में धर्म, अध्यात्म, शिक्षा का महत्व है, तो इसके साथसाथ राष्ट्र की मुक्ति की संकल्पना - साथ -भी उनकी पत्रकारिता का मूल स्वर है। कांग्रेस अध्यक्ष पद से राष्ट्र की चिंताओं को उजागर करने के साथ भारत की संगठनात्मक क्षमता को मजबूत करने का आह्वान मालवीय जी करते हैं। मालवीय जी एकराष्ट्रवादी पत्रकार थे और अपनी पत्रकारिता के माध्यम से उन्होंने देश की आजादी की लड़ाई को निर्णायक मोड़ दिया। एक पत्रकार के साथसाथ वह खुद स्वतंत्रता के सच्चे सिपाही थे।- 'अन्दलीवे हिन्द नजर' ने 'देवता है मालवी' शीर्षक कविता में मालवीय जी को स्वंतत्रता की लड़ाई का रहनुमा कहते हुए लिखा है-

"सर बसर मातम है दुनिया, जिस तिलक की मौत पर।
सच तो यह है उस तिलक का रहनुमा है मालवी।।
गोखले ने जो दिया था हमको पैग़ामअजल।-ए-
ए उस इब्तिदा की इंतिहाँ है मालवी।। 'नजर'"13

देश की उन्नति उसकी भाषा की उन्नति पर अवलंबित होती है। भारत के राष्ट्रीय आंदोलन के दौरान भाषा-प्रेम देश-प्रेम का हिस्सा बनकर उभरा। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेन्दु हरिश्चंद्र ने ' निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल कहकर भाषा प्रेम को देश प्रेम के साथ जोड़ दिया। उन्होंने अपनी रचनाओं के माध्यम से जन-जन के मानस में राष्ट्रीय चेतना का प्रसार किया। भारतेन्दु हरिश्चंद्र की पत्रिका कविवचन सुधा के बारे में प्रख्यात आलोचक रामविलास शर्मा लिखते हैं- "इस पत्रिका का महत्व हिंदी में राष्ट्रीय भावों को जागृत करने, हिंदी पत्रकारों को प्रेरणा देने तथा भाषा और पत्रकारिता को सहज जातीय स्वरूप प्रदान कर पाठकों की अभिरुचि जागृत करने में है।"

इतिहास गवाह है कि हिंदी की बेहद महत्वपूर्ण पत्रिका सरस्वती का प्रकाशन जिस समय हुआ वह राष्ट्रीय आंदोलन के साथ-साथ सामाजिक सांस्कृतिक आंदोलन का भी समय था। जनवरी 1906 की सरस्वती में बंदे मातरम गीत को संस्कृत, हिंदी तथा अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित किया। इसी अंक में ईश्वर स्तुति नाम से एक कविता भी छपी जिसमें कवि ईश्वर से वह शक्ति देने की प्रार्थना करता है, जो उसे स्वतंत्र भारत में प्राप्त थी:-

"भारत को तू दे वह बिक्रम
जिससे वह हो पुनः पूजयतम"

इसके साथ-साथ स्वाधीनता की भावनाओं को उभारने वाली अंग्रेजी कविताओं के अनुवाद भी सरस्वती पत्रिका में छापे गए। इन कविताओं ने भारतवासियों में देशभक्ति व राष्ट्रीयता की भावनाओं का विकास किया।

राष्ट्रीय आंदोलन में हिन्दी पत्रकारिता का अपना विशेष स्थान रहा है। भारतीय प्रेस ने भारतीयों में प्रजातांत्रीय शासन प्रणाली, स्वशासन तथा आत्मनिर्भरता की भावनाएं उत्पन्न करने में सहयोग दिया। भारतेंदु व द्विवेदी युग के पत्रकारों ने ब्रिटिश शासन के अन्यायों का डटकर विरोध किया और स्वतंत्रता संग्राम में अपना भरपूर सहयोग दिया है। अतः हिंदी पत्रकारिता राष्ट्रीय आंदोलन में एक ओर भारतीयों को संगठित करने का सूत्र सिद्ध हुआ, वहीं दूसरी ओर जन-जन में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का साधक बना।

संदर्भ :

1. कृष्णदत्त द्विवेदी : भारतीय पुनर्जागरण और मदनमोहन मालवीय, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 1981, पृ. 29

2. समीर कुमार पाठक :मदनमोहन मालवीय लोकजागरण का लोकवृत्त,नयी किताब प्रकाशन, दिल्ली, प्र०सं०-2016, पृ. 211

3. शत्रुघ्न कुमार मिश्र. 2022. स्वतंत्रता-संघर्ष, हिंदी पत्रकारिता और मदनमोहन मालवीयअपनी माटी (ISSN 2322-0724)

4. हर प्रकाश गौड़नेशनल पब्लिशिंग हाउस।.सरस्वती और राष्ट्रीय जागरण .

****